

कक्षा - 10

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 10

कलम और तलवार

रामधारी सिंह 'दिनकर' (1908-1974)

भाग – 1

पल्लवी कलिता

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



रामधारी सिंह 'दिनकर'

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कवि परिचय

रामधारी सिंह 'दिनकर' (1908-1974)

जन्म - 1908 ई. में बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया गाँव में।

उपाधि – राष्ट्रीय भावना के प्रखर गायक; गुप्त के बाद राष्ट्रकवि के रूप में माने जाते हैं।

प्रारंभिक शिक्षा - ग्रामीण पाठशाला से।

उच्च शिक्षा - पटना विश्वविद्यालय से 1933 में बी.ए. की डिग्री प्राप्त की।

प्रारंभिक कार्य - एक उच्च विद्यालय में प्रधानाचार्य के पद पर कार्य।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कर्म जीवन-

उप-रजिस्ट्रार

युद्ध-प्रचार विभाग के उप-निदेशक

लंगट सिंह कॉलेज (मुजफ्फरपुर) में हिन्दी विभागाध्यक्ष

भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति

भारत सरकार के शिक्षा सलाहकार

राजनीतिक योगदान बाद में राज्यसभा के सदस्य (मनोनीत)।

सम्मान - राष्ट्रीय सेवाओं के लिए पद्मभूषण।

पुरस्कार - महाकाव्य 'उर्वशी' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

रचनाएँ - प्रमुख कृतियाँ: रेणुका, हुँकार, रसवंती, सामधेनी, नील कुसुम, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा, चक्रवाल आदि।

कवित्व विशेषताएँ -

भाषा सरल तथा स्पष्ट

राष्ट्र, विचार और गतिशीलता के कवि

निधन - 1974 ई. में।



दो में से क्या तुम्हें चाहिये, कलम या कि तलवार ?
मन में ऊँचे भाव कि तन में शक्ति अजेय अपार ?

अंध कक्ष में बैठ रचोगे ऊँचे, मीठे गान ?
या तलवार पकड़ जीतोगे बाहर जा मैदान ?
जला ज्ञान का दीप सिर्फ फैलाओगे उजियाली ?
अथवा उठा कृपाण करोगे घर की भी रखवाली ?

तन में	:	শৰীৰত
अजेय	:	জিনিব নোৱাৰি
उजियाली	:	আলোক
कृपाण	:	তৰোৱাল



कलम देश की बड़ी शक्ति है भाव जगानेवाली,
दिल ही नहीं दिमागों में भी आग लगाने वाली।
पैदा करती है कलम विचारों के जलते अंगारे,
और प्रज्ज्वलित-प्राण देश क्या कभी मरेगा मारे ?

अंगारे	:	অঙঠা
प्रज्ज्वलित	:	প্রজ্বলিত

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



लहू गर्म रखने को रखो मन में ज्वलित विचार
हिंस्र जीव से बचने को चाहिये किन्तु, तलवार।
एक भेद है और, जहाँ निर्भय होते नर-नारी,
कलम उगलती आग, जहाँ अक्षर बनते चिनगारी।

लहू	:	तेज
हिंस्र	:	हिंसक
चिनगारी	:	स्फूलिंग

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্ৰ শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation



जहाँ मनुष्यों के भीतर हरदम जलते हैं शोले,
बाँहों में बिजली होती, होते दिमाग में गोले।
जहाँ लोग पालते लहू में हलाहल की धार,
क्या चिन्ता यदि वहाँ हाथ में हुई नहीं तलवार ?

हलाहल : কালকূট নামৰ বিষ, সকলো বিনষ্ট কৰাৰ শক্তি

'कलम और तलवार'

नामक प्रस्तुत कविता में राष्ट्रकवि दिनकर ने कलम और तलवार- दोनों की स्वतंत्र सत्ता तथा महत्ता पर प्रकाश डाला है। कलम ज्ञानशक्ति का तथा तलवार दैहिक शक्ति का प्रतीक है। एक ओर, जहाँ कलम के द्वारा मनुष्य ज्ञान का दीप जला सकता है तथा विचारों की शक्ति के द्वारा समाज में नयी चेतना पैदा कर सकता है; वहीं दूसरी ओर युद्ध में विजयी होने के लिए तथा हिंसक पशुओं से आत्मरक्षा हेतु तलवार की आवश्यकता पड़ती है।

मूल्यांकन



1 दिनकर को किस उपनाम से जाना जाता है ?

क छायावादी कवि

ख भक्त कवि

ग राष्ट्रकवि

घ प्रगतिवादी कवि

मूल्यांकन



2 कलम किसे जन्म देती है?

क युद्ध

ख भय

ग विचारों के जलते अंगारे

घ अशांति

मूल्यांकन



3 'प्रज्ज्वलित-प्राण देश' से क्या आशय है?

क कमजोर देश

ख गुलाम देश

ग जागरूक और जीवंत देश

घ युद्धरत देश

मूल्यांकन



4 | ऊँचे और मीठे गान किससे जुड़े हैं ?

क तलवार

ख युद्ध

ग कलम

घ शक्ति

मूल्यांकन



5 | ज्ञान का दीप जलाने से क्या फैलता है ?

- क अंधकार
- ख भय
- ग उजियाली ✓
- घ युद्ध